CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139 | Special Issue -28 , Vol. 7 | March 2020 | Peer Reviewerd

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Impact Factor – 7.139 ISSN – 2319-86948
Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Relevance of Mahatma Gandhi in Today's World

March 2020 Special Issue – 28, Vol. 7

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editors
Guide
Dr. B. G. Gaikwad
Principal
Shivaji College, Hingoli (MS)

Editor
Dr. Balasaheb S. Kshirsagar
Director, Gandhi Study Center
Shivaji College, Hingoli (MS)

Co-Editor
Dr. Wagh S.G.
Dept. of Hindi
Shivaji College, Hingoli (MS)

Shaurya Publication, Latur

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

CURRENT GLOBAL REVIEWER International Multidisciplinary Research Journal | ISSN- 2319-8648
Impact Factor - (SJIF) – 7. 139 | Special Issue -28 , Vol. 7 | March 2020 | Peer Reviewerd

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

Index

1. 21 वी सदी में गांधी विचारधारा की प्रासंगिकता 1
डॉ. मुकेश वसावा
2. गाँधीजी के सामाजिक न्याय की परिकल्पना 4
प्रा.डॉ.संजय गणपती भालेराव
3. म.गांधीजी के सत्य और अहिंसा संबंधी विचार 7
प्रा.डॉ.रमेश वि.मोरे
4. हिंदी साहित्य और गाँधीवाद 9
डॉ.पंडित बन्ने
5. महात्मा गांधीजी के आर्थिक एवं विभिन्न विचारोंके दर्शन 12
श्रीमती प्रा. डॉ. जाधव मिनाश्री भास्कर
6. [redacted] 15
7. महात्मा गांधी की सहिंष्णुता 17
डॉ. शंकर रामभाऊ पजई
8. माहात्मा गांधीजी के आर्थिक और सामाजीक विचार 19
वाळवंटे राजकुमार अर्जुन
9. युग पुरूष महात्मा गांधी और स्वतंत्रता आंदोलन 22
(बापू एकांकी के विशेष संदर्भ में)
डॉ. व्हत्ते धीरज जनार्धन
10. गांधीवाद के राजनीतिक आयाम 24
प्रा. अतुल नारायण खोटे
11. महात्मा गांधीजी की ग्राम स्वराज्य की अवधारणा कि ग्रामिण विकास में भुमिका 27
विकास वसराम आडे , तुकाराम व्ही. आडे
12. गांधीवाद एक चर्चा 31
डॉ.मा.ना.गायकवाड

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 28 , Vol. 7 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
March 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

महात्मा गांधी की आत्मकथा "सत्य के प्रयोग" में विद्यार्थी जीवन

[redacted]
अध्यक्ष , हिन्दी विभाग, शिवाजी महाविद्यालय, हिंगोली . जि . हिंगोली .431513

शोध सार-

आत्मकथा से सिधा अर्थ स्वयं की कथा कहने या लिखने से है। आत्मकथा एक व्यक्ति के समस्त जीवन का इतिहास ही नहीं बल्कि उसमें वर्णित घटनाओं की , क्रिया एवं प्रक्रियाओं का भी अंकन है। आत्मकथा में लेखक समाज का प्रतिष्ठीत प्राणी होता है। प्रतिष्ठित व्यक्ति की कुछ विशेष विशेषताएं होती हैं जिसे भावी समाज जानने हेतु आतुर हो जाता है। यही कारण है कि वह प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति अपने समर्थकों के अनुरोध से प्रेरणा प्राप्त कर उनकी आतुरता को शांत करने के लिए आत्मकथा लेखन आरम्भ करता है।

मुख्य शब्द- आचरण की शुध्दता, अक्षरों की सुंदरता, अनुशासन,

आधुनिक युग में साहित्य की विधाओं में अनेक परिवर्तन हुए है। आज गद्य का जो विविधोन्मुखी विकास दिखाई देता है, यह आधुनिक युग क ही देन है। युरोपीय सभ्यता का वहन करने वाली अंग्रजी भाषा के अध्ययन एवं अध्यापन के परिणाम स्वरुप साहित्यिक जगत में नूतन प्रवृतियों का समावेश हुआ और अनेक नवीन विधाएं भी प्रकाश में आई या इस प्रकार भी कहा जा सकता है कि साहित्य में जैसे-जैसे यथार्थता का समावेश होता जात है, वैसे ही वैसे उसकी गद्यात्मक विधाओं की समृध्दि होती जाती है। यही कारण है कि आधुनिक युग में आत्मकथा, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृत्तात, डायरी, पत्राचार तथा इण्टरव्यू आदि नवीन विधाओं का अनवरत परिष्कार हो रहा है। इन सम्पूर्ण विधाओं में आत्मकथात्मक साहित्य सर्वातम कलापूर्ण एवं मानवीय विधा है, जिसने अपनी विशिष्टताओं के कारण अपना पृथक अस्तित्व स्थापित कर लिया है। आत्मकथा हिन्दी साहित्य की नवविकसीत विधा के रुप में प्रतिष्ठित है। जिसका शाब्दकि अर्थ है- 'अपनी कथा' अर्थात इसमें लेखक स्वयं के बीते हूऐ जीवन की कहानी का विवेचन यथार्थता के साथ करता है। आत्मकथा से सिधा अर्थ स्वयं की कथा कहने या लिखने से है।[1] प्रस्तुत शोध पत्र में मनुष्य के जीवन में शिक्षा का महत्व असाधारण है साथ ही सामाजिक जीवन में शुध्द आचरण अत्यंत महत्व का है। गांधीजी के विद्यार्थी जीवन को समझना प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्येश्य रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में संशोधन की समीक्षात्मक तथा विश्लेषनात्मक पध्दति को अपनाया गया है।

आत्मकथा एक व्यक्ति के समस्त जीवन का इतिहास ही नहीं बल्कि उसमें वर्णित घटनाओं की , क्रिया एवं प्रक्रियाओं का भी अंकन है। आत्मकथा में लेखक समाज का प्रतिष्ठीत प्राणी होता है। प्रतिष्ठित व्यक्ति की कुछ विशेष विशेषताएं होती हैं जिसे भावी समाज जानने हेतु आतुर हो जाता है। यही कारण है कि वह प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति अपने समर्थकों के अनुरोध से प्रेरणा प्राप्त कर उनकी आतुरता को शांत करने के लिए आत्मकथा लेखन आरम्भ करता है। मोहनदास करमचंद गांधी ने कहा था - मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है।[2] महात्मा गांधीजी ने अपने "सत्य के प्रयोग" के अतर्गत अपने विद्यार्थी जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला हुआ है। जिसके माध्यम से आज के विद्यार्थीयो को एक महत्वपुर्ण संदेश दिया जा सकता है। किसी व्यक्ति विशेष का जीवन-दर्शन सारे विश्व के लिए अनुकरणीय इसलिए होता है कि वह अपने जीवन का बलिदान सिर्फ अपने आदर्श के लिए नही, बल्कि सारे विश्व के लिए करता है। महात्मा गांधी एक ऐसे ही महामानव थे। महात्म गांधीजी ने स्वयं काहा है कि "आत्मकथा लिखने का मेरा कोई आशय नहीं था। मुझे तो आत्मकथा के बहाने सत्य के जो अनेक प्रयोग मैंने किये है उसकी कथा लिखी है। उसमे मेरा जीवन ओत प्रोत होने केकर कारण कथा एक जीवन वृत्तांत जैसी बन जायेगे।"[3] उनकी आत्मकथा, सत्य के प्रयोग के कुछ अंश को ही मेरा विद्यार्थी-काल में प्रस्तुत किया है। अपने विद्यार्थी जीवन के एक पहलुओं पर उन्होने प्रकाश डाला है, साथ ही साथ शिक्षा संबंधी अपने भौतिक विचारों को भी प्रस्तुत किया है। सत्य के प्रति आस्था होने के कारण उनके विद्यार्थी जीवन में कई एसे प्रसंग आए जिनमे मुलत : उनकी गलती न रहते हुएभी उन्होने उसे स्वीकार किया । इसका जिक्र उन्होने स्पष्टता के साथ किया है। अपने विद्यार्थी जीवन में वे नहीं माने किंतु शिक्षकों का प्रेम-संपादन वे हमेशा करते रहे। 4 और 10 रुपए की मासिक छात्रवृतियाँ भी उन्होनें प्राप्त कि किंतु उसमें उनकी योग्यता की अपेक्षा भाग्यने ने ज्यादा मदत की इसे वे स्वीकार करते है।

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingo

SHIVAJI COLLEGE HINGOLI

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 28, Vol. 7 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
March 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

अपने विद्यार्थी- जीवन में उन्होंने आचरण की शुध्दता पर (सदाचार की वृत्ति) विशेष बल दिया है। इसलिए माता-पिता के पास उनक पढाई या चाल-चलन को लेकर कभी कोई शिकायत नहीं की गई। सदाचार में चूक होने पर शिक्षकों का उलाहना देना या देने की भावना भी उत्पन्न होना, दंड मात्र भी समझा जाना- यह स्थिति उनके लिए असहनीय थी।
उस समय थेरावजी एथ्लजी गीमी हेडमास्तर थे। एक और वे विद्यार्थी-प्रिय तो दूसरी ओर-कठोर अनुशासन प्रिय एवं नियम-पालन के प्रतिक कटिबद्ध उन्हों ने ऊँचे दर्जे के विद्यार्थीयों के लिए कसरत एवं क्रिकेट अनिवार्य कर दी। ऐसे समय महात्मा गांधी के लिए भी जाना अनिवार्य हो गया। किंतू व्यायाम के प्रति रुची और कसरत का शिक्षा के साथ कोई संबंध नहीं इस प्रकार की गलत विचारधारा उस समय उनमें व्याप्त थी। व्यायाम के प्रति अरुची का एक कारण उनका झेंपूपन, तो दूसरा पिताजी की सेवा- सुश्रुषा करने की तीव्र इच्छा। परिणामस्वरुप यथा समय न पहुंच पाने पर दोषी मानकर उन्हे देर से आना का जुर्माना हो गया। अनुपस्थिति का सही कारण कहलाने पर भी उन्हे झूठा कहा गया-इस बात से उन्हें अत्यंत दु:ख पहुँचा। अपनी पढाई के दिनों में उनकी यह पहली और आखरी भूल थी बाद में शिक्षा संबंधी अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हुए उन्होने कहा कि शारीरिक शिक्षा के लिए भी विद्या अध्ययन में उतना ही स्थान दिया जाना चाहिए जितना मानसिक शिक्षा को दिया जाता है।

शिक्षा में अक्षरों की सुंदरता अनिवार्य है। उनका कहना था कि अच्छा अक्षर लिखना विद्या का आवश्यक अंग है। खत सुधारने के लिए लेखन-कला आवश्यक है। अपनी इस कमतरता आवश्यक अंग है। अपनी इस कमतरता का अहसास उन्हें तब हुआ, जब दक्षिण अफ्रिका में जन्में और-पढे युवकों के मोती के तरह अक्षर को उन्होंने देखा। उस समय उन्हें यह महसूल हूआ कि खत लेखन का खराब होना यह अधूरी शिक्षा की निशानी है। इसलिए छोटी उम्र में ही बच्चों को सुन्दर लिखावट की शिक्षा दी जानी चाहिए यह विचार प्रस्तूत किया।

शिक्षा संबंधी अपने विचारों को अभिव्यक्त करते हूए उन्होंने कहा कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही होना चाहिए, फिर भी शिक्षा में मातृभाषा के साथ ही साथ राष्ट्रभाषा, संस्कृत, हिन्दी, और अन्य भारतीय भाषा के लिए स्थान दिया जाना चाहिए। संस्कृत उन्हें उस समय कठिंण आवश्यक लगती थी किंतु कृष्णशंकर मास्तर के सह मार्गदर्शन के कारण ही वे संस्कृत शास्त्रों का आनंद ग्रहण कर पाए। उनका दृष्टिकोन यह रहा कि हिन्दी, गुजराती संस्कृत वास्तव में एक ही भाषा है और उसी प्रकार फारसी और अरबी भी।

उनका कहना था कि हमार शिक्षा व्यवस्था में धार्मिक शिक्षा को भी कही न कहीं स्थान दिया जाना चाहिए। धर्म से उनका अभिप्राय-आत्मसाक्षात्कार से, आत्म-ज्ञान से है जो उन्हें पाठशाला में शिक्षकों के माध्यम से सहज रुप में मिलनी चाहिए थी किंतु वह नहीं मिल पाती। किंतु वहीं शिक्षा उन्हें अपनी पुरानी थई (रम्भा बाई) से मिली जिसके परिणाम स्वरुप रामनाम स्वरुप रामनाम की अमोघ शक्ति वे जीवन भर अनुभव कर सके।

उनका विचार था कि शुभ -अशुभ संस्कारों का गहरा प्रभाव व्यक्ति जीवन पर पडता है। संस्कारों के कारण ही जीवन को एक नई दिशा मिलती है इसलिए बचपन में ही बच्चों पर अच्छे संस्कार डाले जाने चाहिए। संस्कारों के निर्माण में अछछे ग्रंथो को मनन-पठन का बहुत बडा योगथन होता है इसलिए महात्मा गांधी को इस बात का बहुत पश्चरताप रहा कि वे लडकपन में अछछे श्रेष्ठ ग्रंथो का श्रवण-पठन नहीं कर पाए।

इस प्रकार महात्मा गांधीजी ने अपने जीवन के अनेक पहलुओं को बतलाते हुए अपने विद्यार्थी जीवन को प्रस्तुत किया है। जिसके माध्यम से आज का विद्यार्थी उनसे प्रेरणा लेकर अपने जीवन मे एक आदर्श विचारों को लेकर चल शकता है।

सन्दर्भ सुची :-

1) व्यास ज्योति , आधुनिक हिन्दी साहित्य में आत्मकथा और संस्मरण विधा, अमन प्रकाशन कानपुर पृष्ठ - 15
2) माथुर संगीता, गांधी दर्शन उद्योग वाद एवं संस्कृति, न्युमन पब्लिकेशन, परभणी जुलाई 2014, पृष्ठ-07
3) मोहनदास करमचंद गांधी, संक्षेपाकार भारतकुमार कुमारअप्पा, गांधीजी की संक्षीप्त आत्मकथा, नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद-14 अगस्त - 2015, पृष्ठ- 05

T.C.
M.Bhawali

Assistant Professor
Shivaji College,Hingoli.
Tq.& Dist.Hingoli.(MS.)

PRINCIPAL
SHIVAJI COLLEGE
Hingoli Dist. Hingoli